ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 307-310

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

राजा महेन्द्र प्रताप का एक संसद सदस्य के रूप में योगदान

गौरव कुमार सिंह

असि0 प्रोफेसर– इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय,मौंट मथुरा (उ0प्र0) भारत

Received-14.09.2022, Revised-19.09.2022, Accepted-25.09.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांश:– *राजा महेन्द्र प्रताप का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रवेश 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में हुआ था। उसके बाद उन्होंने कई बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तारीफ की। जब भारत स्वतंत्र हुआ तब 1952 में चुनाव हुए। राजा महेन्द्र प्रताप ने भी इन चुनावों में एक प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया। राजा महेन्द्र प्रताप सिंह कहा करते थे कि हमें मनुष्य बनाने चाहिए, हमें और अच्छे आदमी चाहिए। वे कहते थे कि अगर एक अच्छा मनुष्य न्यायाधीश बनकर बैठा है तो वह बेहतर निर्णय देगा। उन्होंने लोगों की स्वतंत्रता पर बहुत बल दिया। राजा महेन्द्र प्रताप दूरदृष्टि वाले अर्थशास्त्री भी थे। उन्होंने एक साझा एशियाई बाजार का समर्थन किया। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।*

कुंजीभूत शब्द– प्रतिनिधि, न्यायाधीश, स्वतंत्रता, कांग्रेस, अधिवेशन, संसद, नियम, चुनाव, स्पीकर, भाषण, पदचिन्ह, बजट।

राजा महेन्द्र प्रताप ने 1906 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में शिरकत की थी। 1910 में इलाहाबाद अधिवेशन में वह रिसेप्शन कमेटी के सदस्य बनाये गये। इस प्रकार वह पूर्ण तरीके से कांग्रेसी बन गये। 1946 में उन्होंने अपने भाशण में कांग्रेस दल के दृष्टिकोण, लक्ष्यों और योजनाओं का समर्थन किया। उन्होंने महात्मा गाँधी द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन को सफल बनाने के लिए उनकी प्रशंसा की। उन्होंने यह भी कहा कि इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप देश बहुत आगे बढ़ गया है। इसने कांग्रेस के गौरव को बढ़ा दिया है उनका विचार था कि महान महात्मा गाँधी के प्रयासों से वह अपनी मातृभूमि वापस आ सके है। उनके अभिभाशण तथा विचारों से स्पष्ट था कि वह कांग्रेस की नीतियों का समर्थन करते थे और खुद कांग्रेस पार्टी के सदस्य के रूप में शामिल होकर संतुष्ट थे।

राजा महेन्द्र प्रताप इस बात से भी प्रसन्न थे कि कांग्रेस की केन्द्रीय सरकार का गठन हो गया था लेकिन उनका मानना था कि भविष्य में बहुत कार्य बाकी है। उन्होंने कहा, "हम अभी तक अपने राष्ट्र की नब्ज तक नहीं पहुँच पाये हैं, हमें आधारभूत से ही कार्य करना है और आन्तरिक स्थिति को सुधारना है।[1]

राजा महेन्द्र प्रताप ने 1952 ई. में राजाजी के दृढ़शक्ति का प्रकटीकरण से लोकसभा चुनावों में अपना अभिप्राय स्पष्ट कर दिया। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने उनके पास कांग्रेस टिकट का प्रस्ताव भेजा जिसके अनुसार राजा महेन्द्र प्रताप को कांग्रेस का टिकट दिया जाना था। राजा महेन्द्र प्रताप ने इसको स्वीकार कर लिया। इनके पश्चात् उन्हें एक रेहन पर हस्ताक्षर करने को कहा गया जो निम्न था, "मैं कांग्रेस पार्टी और उसके संसदीय बोर्ड के समस्त नियमों, धाराओं और निर्णयों का पालन करूँगा।" पण्डित गोविन्द बल्लभ पंत समेत कई बड़े नेताओं ने उन्हें रेहन पर हस्ताक्षर करने तथा टिकट का फार्म भरने का अनुरोध किया किन्तु वह नहीं माने। इस चुनाव में वह प्रो0 कृष्ण चंद्र से पराजित हो गये जो कांग्रेस की सीट पर चुनाव लड़ रहे थे।[2]

राजा महेन्द्र प्रताप ने 1957 में पुनः मथुरा से चुनाव लड़ा इस बार भी वह स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में खड़े हुए और इस चुनाव को 26000 वोटों से जीता।[3] उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस पार्टी के चौधरी दिगम्बर सिंह को पराजित किया। वह पूरे सत्र सांसद रहे। संसद के सदस्यों में वह ऐसे सदस्य के रूप में रहे जिसने अपने स्वतंत्र विचारों और देशप्रेम के प्रति कोलाहकारी रूप अपनाये रखा।

जब वह संसद में शपथ लेने के लिये पहुँचे तो भारत के प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने उनका स्वागत इन शब्दों में किया, "एक पुराने और मजबूत शख्सियत का हमारे बीच में आगमन हुआ है और हम निश्चित रूप से इनके लम्बे अनुभवों का लाभ पायेगें।" लेकिन राजा महेन्द्र प्रताप ने अपने अभिभाशण में कांग्रेस की नीतियों का विरोध किया। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने इस पर यह विचार प्रकट किया कि राजा महेन्द्र प्रताप अकेले एक निर्जन स्थान पर एक बड़े दलदल में खड़े हैं।[4]

11 मई 1957 को श्री एन अयंगर लोकसभा के स्पीकर के रूप में चुने गये जिनका राजा महेन्द्र प्रताप ने स्वागत किया।[5] उन्होंने कहा कि दल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं वास्वत में निर्दलीय प्रत्याशी ही राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं उनकी इच्छा थी कि ऐसी स्थिति को और बढ़ावा मिलना चाहिए। राजा महेन्द्र प्रताप इस पक्ष में नहीं थे कि लोगों को बड़ी संख्या की कानूनी परिधि में बाँधा जाये। उनका विचार था कि विधिक प्रक्रिया इतनी जटिल होती है कि लोग इसके साथ चल नहीं सकते।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

सांसद के रूप में राजा महेन्द्र प्रताप का दर्शन– राजा महेन्द्र प्रताप एक सांसद के रूप में कहते थे कि हमें मनुष्य बनाने चाहिए। हमें और अधिक अच्छे आदमी चाहिए। मगर एक अच्छा व्यक्ति न्यायाधीश के रूप में बैठा है तो वह कानून से बेहतर निर्णय देगा। अगर कोई दुष्ट न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठा है तो वह वहाँ पर सभी तरह की शरारतें करेगा। हमें प्रयास करना चाहिए कि नैतिकता का विकास हो। हमें और अधिक नैतिक व्यक्ति तथा अधिक नैतिकता की आवश्यकता है।

14 मई, 1957 को राजा महेन्द्र प्रताप ने सरकार की सम्पूर्ण संरचना की आलोचना करते हुए कहा कि कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार में कोई अन्तर नहीं है और यह सरकार भी बिल्कुल वही पद्धति अपना रही है जैसी ब्रिटिश शासन में थी।[6] उन्होंने कहा कि वही कलेक्टर, वही बड़ा साहिब, वहीं कप्तान, और वही थानेदार मौजूद हैं। उन्होंने कहा पुलिस ने आन्दोलन करते काँग्रेसियों पर लाठीचार्ज किया आज वह उनको सलाम करते हैं। लेकिन ढांचा अपरिवर्तित है इसीलिए वह गरीब तबके पर निरन्तर लाठीचार्ज करते रहेगें। राजा महेन्द्र प्रताप चाहते थे कि स्थापित ब्रिटिश व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन किया जाये। राजा महेन्द्र प्रताप ने कहा, "यह एक ऐसी सरकार है जो लोगों पर कर लगाती है। यह एक लोकप्रिय सरकार हो ही नहीं सकती। जो लोगों पर कर लगाते हैं तथा पैसे को आपस में बाँट लेते हैं और इसको यह राष्ट्रवाद कहते हैं। महोदय मैं कहना चाहता हूँ कि यह सरकारीकरण है और यह सरकारीकरण सरकारी नौकरों के हितों के लिए है।"[7]

अपने संसदीय भाषण के दौरान राजा महेन्द्र प्रताप ने जर्मनी, तुर्की और अफगानिस्तान के नेताओं द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन में दी गयी सहायता का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने गाँधी के आन्दोलनों में इसीलिए सहायता पहुँचाई क्योंकि वह उन क्रान्तिकारियों से डरते थे जो काबुल और मास्को में बैठे थे। राजा महेन्द्र प्रताप ने नेताजी सुभाश चन्द्र बोस का भी उल्लेख किया और यह भी कहा कि वह उनके पदचिन्हों पर चलते हैं। उन्होंने संसद के सदस्यों के विरोध और अवरोध के बाबजूद भी अपने अभिभाषण को जारी रखा। वह अपने भाषण में बहुत कठोर हो गये और खुलकर कहा, "अगर यहाँ सुभाष चन्द्र बोस नहीं होते तो मेरा विचार है हमें स्वतंत्रता नहीं मिलती।"[8]

राजा महेन्द्र प्रताप ने मध्यवर्गीय परिवारों के बजट सर्वेक्षण का भी विरोध किया। उन्होंने कहा, "क्या सरकार जानती है कि केवल दिल्ली में ही ऐसे बहुत सारे मध्यवर्गीय परिवार है जो वित्तीय परेशानियों से जूझ रहे हैं।" 28 मई, 1957 को उन्होंने 1957–58 के वार्षिक बजट का विरोध किया और कहा कि इस बजट को वापस ले लेना चाहिये अन्यथा लोग इन करों के बोझ तले गम्भीर रूप से दब जायेगें।[9]

सैनिकों के विषय में राजा महेन्द्र प्रताप सिंह का सुझाव था उनको तीन घण्टे की सैन्य विज्ञान की शिक्षा देनी चाहिए और बाकी के पाँच घण्टों में उन्हें छावनी फैक्ट्री, डेरी, फार्म और खेतों में काम करना चाहिए। सैनिक अपनी आवश्यकताओं का उत्पादन कर सकते हैं तथा राष्ट्र पर बोझ नहीं बनेगें। इस तरह हम ऐसे दस लाख सैनिक तैयार कर सकते हैं जो अपनी आपूर्ति स्वयं कर सकते हैं। इनको कश्मीर से कन्याकुमारी तक बिखेरा जा सकता है।[10]

राजा महेन्द्र प्रताप ने यमुना के ऊपर रेलवे पुल बनाने की माँग रखी। उन्होंने कहा कि यह माँग लगभग 27 वर्षों से चली आ रही है और इसे अभी तक पूरा नहीं किया गया है जबकि वृन्दावन में यमुना नदी के ऊपर रेलवे पुल बनाना अति आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जुलाई, अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर के महीने में देश के कोने–कोने से तीर्थयात्री वृन्दावन शहर में आते हैं और इसकी कमी से उन्हें बहुत तकलीफ का सामना करना पड़ता है। उन्होंने अपनी मांग में यह भी कहा कि मथुरा और वृन्दावन के बीच में छोटी लाईन का विस्तार अलीगढ़ तक किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि अगर यह सुविधा मुहैया कराई जाये तो न केवल तीर्थयात्रियों की यात्रा सुविधाजनक हो जायेगी वरन् सरकार को इससे अच्छी आय भी होने लगेगी।

4 दिसम्बर, 1957 को राजा महेन्द्र प्रताप ने एक गम्भीर मुद्दे पर चर्चा की। मद्रास राज्य में बहुत सारे स्थानों पर भारतीय संविधान के तमिल संस्करण की प्रतियों को जलाने के मामले ने गम्भीर रूप अख्तयार कर लिया था। इस विषय पर बोलते हुए राजा महेन्द्र प्रताप ने कहा, "दक्षिण में कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा संविधान की प्रतियों को जला देना हमारी संस्कृति, धर्म और समाज के लिए एक गम्भीर मुद्दा है। यह घटना हमारे देश के भविष्य को प्रभावित कर सकती है। इसीलिये मेरी प्रार्थना है कि इस मामले को बहुत गम्भीरता से लिया जाये। कांग्रेस शासन के दस वर्षों पश्चात् भी ऐसी घटनायें हो रही है तथा ब्राहमणों को मारा जा रहा है।

6 दिसम्बर, 1957 को उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री पं0 जवाहरलाल नेहरू के उस कथन पर आपत्ति की जब वह खाद्य उत्पादन की समस्या की चर्चा करते हुये जनसंख्या नियंत्रण पर बोलने लगे। राजा महेन्द्र प्रताप ने कहा कि प्रधानमंत्री खाद्य उत्पाद को जनसंख्या नियंत्रण से जोड़ रहे है। जब जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि उनका यह कथन असंगत है तो राजा महेन्द्र प्रताप ने ताना मारते हुये कहा कि किसी प्रधानमंत्री के लिये यह शर्मनाक है कि वह जनसंख्या नियंत्रण को असंगत कहे।[11]

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

जब किसानों, श्रमिकों और गरीब जनता के उत्पीड़न का प्रश्न उठा तो राजा महेन्द्र प्रताप ने अपने ओजस्वी भाशण से अपने पक्ष रखे। सदन में दिये अपने अभिभाशणों में केवल आज ही नहीं था वरन् वे अपने सुझाव से परिपूर्ण थे। उन्होंने यथा सम्भव प्रयास किया कि सरकार के तानाशाही निर्णयों पर लगाम लगाई जा सके। मंडुआ रेलवे वकशॉप को बनाने में सरकार ने भूमि अधिग्रहण किया इस पर बोलते हुये राजा महेन्द्र प्रताप ने कहा जिन लोगों की भूमि अधिग्रहीत की गई है ऐसे लोगों को वैकल्पिक व्यवस्था के हित भूमि उपलब्ध कराई जाये ताकि वह अपना जीवन यापन कर सके। इसका उत्तर देते हुए रेलमंत्री ने कहा कि यह राज्य सरकार के ऊपर है कि वह भूमि अधिग्रहीत करते समय लोगों को हर्जाना दे रही है अथवा उन लोगों को बसाने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था कर रही है जिनकी भूमि अधिकृत की गई है।[12]

राजा महेन्द्र प्रताप ने विदेश नीति पर भी सांसद के रूप में अपना पक्ष रखा। राष्ट्रमंडल के वे विरोधी रहे तथा संसार संघ को विदेश–नीति का आधार बनाए जाने हेतु प्रयासरत रहे।

राजा महेन्द्र प्रताप संयुक्त परिवार प्रणाली के पक्षधर थे। उनका मानना था कि कांग्रेस और साम्यवादी व्यवस्था उन लोगों को भी लड़ाना चाहते हैं जो लड़ना नहीं चाहते। राजा महेन्द्र प्रताप ने कहा प्रत्येक गाँव और प्रत्येक कस्बे को संयुक्त परिवार समझा जाये और उन्हें सिखाया जाये कि किस प्रकार अपने बड़ों का सम्मान, बच्चों को प्यार और समुदाय के स्वस्थ कार्यों से ही शान्ति को पाया जा सकता है।

3 मार्च, 1958 को रेलवे बजट पर बोलते हुए राजा महेन्द्र प्रताप ने कहा कि रेलवे दुर्घटना की बढ़ती संख्या इस बात का द्योतक है कि किस तरह रेलवे के कर्मचारियों को क्षमता से अधिक कार्य करने के लिए बाध्य किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि रेलवे का चलित स्टॉफ एक दिन में चौदह घण्टे तक कार्य कर रहा है और यह समय आम मानवीय क्षमता से कहीं अधिक है। कभी–कभी रेलवे कर्मचारियों को इससे भी अधिक घण्टों के लिए कार्य करने को बाध्य किया जाता है। रेलवे दुर्घटनाओं की समस्या पर उन्होंने कहा कि इसका एक और बड़ा कारण भी है और वह है रेलवे ड्राईवरों और गार्डों का अत्याधिक मदिरापान करना। उनका सुझाव था कि ऐसा विभाग स्थापित किया जाये जो उन लोगों को नियंत्रित करें जो अत्याधिक मात्रा में शराब का सेवन करते हैं

संसद में अपने अभिभाषण में राजा महेन्द्र प्रताप ने राष्ट्रीयकरण की नीति को अनिष्ठ प्रकाशन की संज्ञा दी। उन्होंने राष्ट्रीयकरण को सरकारीकरण माना और बताया कि सरकारीकरण में केवल सरकारी कर्मचारियों को फायदा होता और उन्हें और अधिक अवसर मिलेगें कि वह जनता की जेब से और अधिक पैसा निकाल सकें। राजा महेन्द्र प्रताप का सुझाव था कि अगर धनी लोगों को रेलवे का निर्माण करने की अनुमति दे दी जाये तो और अधिक अच्छा होगा। 17 मार्च, 1958 को राजा महेन्द्र प्रताप ने वार्शिक बजट के ऊपर अपना अभिभाषण दिया। उन्होंने लोगों का आहवान करते हुए कहा कि वह चक्रमार्क के विचारों से बाहर निकलकर आयें तथा साथ ही साथ अपनी पुरानी संस्कृति को अक्षुण बनाये रखें। उन्होंने कहा कि लोग सार्वजनिक उपकरण, निजी उपकरण और राष्ट्रीय उपकरण पर कुछ कह सकते हैं। इन विचारों की उत्पत्ति पिछले पचास साठ वर्शों में हुई है और इन्होंने लोगों के मस्तिष्क पर अधिकार कर लिया है।

राजा महेन्द्र प्रताप ने जोर दिया कि लोगों को अपनी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए जिसे वह नहीं पा पाये हैं। वह प्रत्येक कदम पर और हर जगह इससे वंचित हैं। उन्होंने पुनः सरकार द्वारा अपनायी गई सड़ी–गली ब्रिटिश व्यवस्था की आलोचना की तथा कहा कि ब्रिटेन द्वारा यह व्यवस्था अपने लोगों के लिए चलाई गई थी और यह उन लोगों की मदद से चलाई गयी थी जो ब्रिटेन द्वारा रिश्वत लेकर राष्ट्र के हितों के विरूद्ध कार्य करते थे।

राजा महेन्द्र प्रताप ने लोगों को कर व्यवस्था के दोशों से भी अवगत कराया। उन्होंने कहा कि कर केवल एक प्रकार का होना चाहिए तथा इस कर को केवल सम्पत्ति, भूमि, आवास तथा फैक्ट्री पर लगाना चाहिए लेकिन चलने पर, सभाओं पर तथा दैनिक जीवन में किसी प्रकार का कर लगाना अनुचित है और सरकार को यह भली–भाँति समझ लेना चाहिए।

राजा महेन्द्र प्रताप एक दूर दृष्टि वाले अर्थशास्त्री भी थे। सितम्बर, 1958 के अपने अभिभाषण में उन्होंने एक साझा एशियाई बाजार का समर्थन किया और पूछा कि क्या ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नेपाल और श्रीलंका का कोई साझा बाजार अस्तित्व में है? उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि इन देशों का एक साझा बाजार और आर्थिक व्यवस्था होनी चाहिए जिससे पड़ोसी राज्यों में एकता का भाव भी दृष्टिगोचर हों।[13]

राजा महेन्द्र प्रताप ने ऐसी कोई भी समस्या का पहलू नहीं छोड़ा जो राष्ट्र को प्रभावित नहीं कर रहा हो। 8 सितम्बर, 1958 को खाद्यान्नों की कमी पर विमर्श करते हुए संसद में अपने विचार रखते हुए राजा महेन्द्र प्रताप ने कहा कि इस पूरे विषय पर पुनः विचार अत्याधिक आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों का विचार है कि हड़ताल और भूख हड़ताल के तरीकों से ही हमारे नेता आज मंत्री बने हैं। इसलिए लोग इन्हीं तरीकों का पालन कर रहे हैं ताकि उनकी मांगें मान ली जाये। हड़ताल

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

के तरीकों को पूरी तरह समाप्त कर देना चाहिए तथा इस विषय से जुड़े समस्त लोगों को आपसी सहयोग से एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण कर देना चाहिए जहाँ सभी लोग सबके लिए कार्य करें और ऐसे समाज का निर्माण हो तथा ऐसी व्यवस्था का निर्माण हो जिसमें सभी प्रसन्न रहें। इस स्थिति में सभी प्रकार के वाद–विवाद अपने आप समाप्त हो जायेगें।[14]

उपलब्धियों का विहंगम परिदृश्य– सांसद के रूप में राजा महेन्द्र प्रताप लोगों की अपेक्षाओं पर खरे उतरे और उन्होंने एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। 16 सितम्बर, 1958 को देश में अराजक तत्वों की बढ़ती समस्या पर विचार करते हुए उन्होंने यह सुझाव दिया कि एक नैतिक मोर्चे का गठन किया जाना चाहिए ताकि आपराधिक प्रवृत्तियों के हदय को परिवर्तित किया जा सके। उनका मानना था कि लोकतंत्र में एक नैतिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि समाज सही दिशा में चल सके। भारत के तत्कालीन गृहमंत्री श्री गोविन्द बल्लभ पंत ने राजा महेन्द्र प्रताप के इस सुझाव का स्वागत किया।

राजा महेन्द्र प्रताप न केवल कलख करने वाले सांसद थे वरन् एक ऐसे व्यक्ति थे जिनको दूरदृष्टिता विरासत में मिली थी और वह समाज के सभी वर्गों का हित चाहते थे। विश्वशान्ति की किसी भी समस्या पर विचार–विमर्श करते हुए उनके मस्तिष्क में संसार संघ का विचार रहता था। राजा महेन्द्र प्रताप अपने विचारों में मजबूत और सीधा, सच्चा बोलने वाले थे। वह एक ऐसे प्रतिभावान व्यक्ति थे जो सरकार की आलोचना करते समय सत्य कहने में नहीं घबराते थे। वह सांसद के अपने कर्तव्यों के निर्वहन में गंभीर थे। राजा महेन्द्र प्रताप निश्चित रूप से पूर्ण राष्ट्रवादी थे। साम्प्रदायिक या जातीय भावना उन्हें अपने सही रास्ते से कभी दिग्भ्रमित नहीं कर पायी। समाज कल्याण के लिए उनके द्वारा किये गये कार्य, उनकी भावना, सच्चाई इस ब्रज क्षेत्र के गौरवमयी पुत्र की गवाह है। आज भी प्रत्यक्ष रूप से इनके द्वारा स्थापित तकनीकी संस्थान प्रेम विद्यालय पॉलिटेक्निक मथुरा इसका जीवंत उदाहरण है जो पिछले सौ वर्षों से उनके विचारों का भौतिक स्वरूप के रूप में आज भी आदर्श बना हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर. एन. अग्रवाल पृ. 231–232.
2. संसार संघ, मंथली पेपर, संपादक शिव कुमार (वृंदावन) इंग्लिश एडीशन, वॉल्यूम 53, नं.2, फरवरी, 1980, पृ.3.
3. वर्ल्ड फेडरशन, हिन्दी एडीशन (डब्ल्यू.एफ.) नं.8, अगस्त 1979, पृ. 3–4.
4. आर. एन. अग्रवाल, पृ. 238.
5. लोकसभा डिबेट्स सैकेण्ड लोकसभा, वॉल्यूम 11, 1957, 10 मई फर्स्ट सेशन, पृ.34–35, सेन्ट्रल सेक्रीटेरियट लाईब्रेरी, न्यू देहली : इलेक्शन ऑफ द स्पीकर : काँग्रेचुलेशन, टू0 दि एम, अनन्तश्यानम आयंगर, स्पीकर ऑफ लोकसभा।
6. लोकसभा डिबेट्स वॉल्यूम I, 1957, पृ. 252–258, मोसन ऑन एड्रेस वाए दि प्रेसीडेन्ट।
7. लोकसभा डिबेट्स वॉल्यूम I, 1957, पृ. 252–258, मोसन ऑन एड्रेस वाए दि प्रेसीडेन्ट।
8. लोकसभा डिबेट्स वॉल्यूम I, 1957, पृ. 252–258, मोसन ऑन एड्रेस वाए दि प्रेसीडेन्ट।
9. लोकसभा डिबेट्स वॉल्यूम II, 1957 (23 मई टू 32 मई) फर्स्ट सेशन, पृ. 2430–2435, जनरल डिस्कशन ऑन दि जनरल बजट 1957–58.
10. लोकसभा डिबेट्स वॉल्यूम II, 1957, पृ. 2430–2435, जनरल डिस्कशन ऑन दि जनरल बजट, 1957–58.
11. लोकसभा डिबेट्स वॉल्यूम IV, 1957, पृ. 3880–3882, लड्स प्रोडक्शन।
12. लोकसभा डिबेट्स, पृ.5547, मंडुआ रेलवे वर्कशॉप, दिनांक 16 दिसम्बर, 1957.
13. लोकसभा डिबेट्स वॉल्यूम XX, 1958, पृ. 6117, कॉमन मार्केट फॉर एशिया।
14. लोकसभा डिबेट्स वॉल्यूम XX, 1958, (8 सितम्बर टू 19 सितम्बर) फिथ सेशन, पृ.5233, मोसन फॉर एडजोरमेन्ट एलाइड फूड क्राइसिस इन उत्तर प्रदेश।

*****